Under CSR Support by ipca | Foundation

ARJUN BATCH

CLASS 10th | GEOGRAPHY

जल संसाधन

WATER RESOURCES

अध्याय-3 | भाग-4

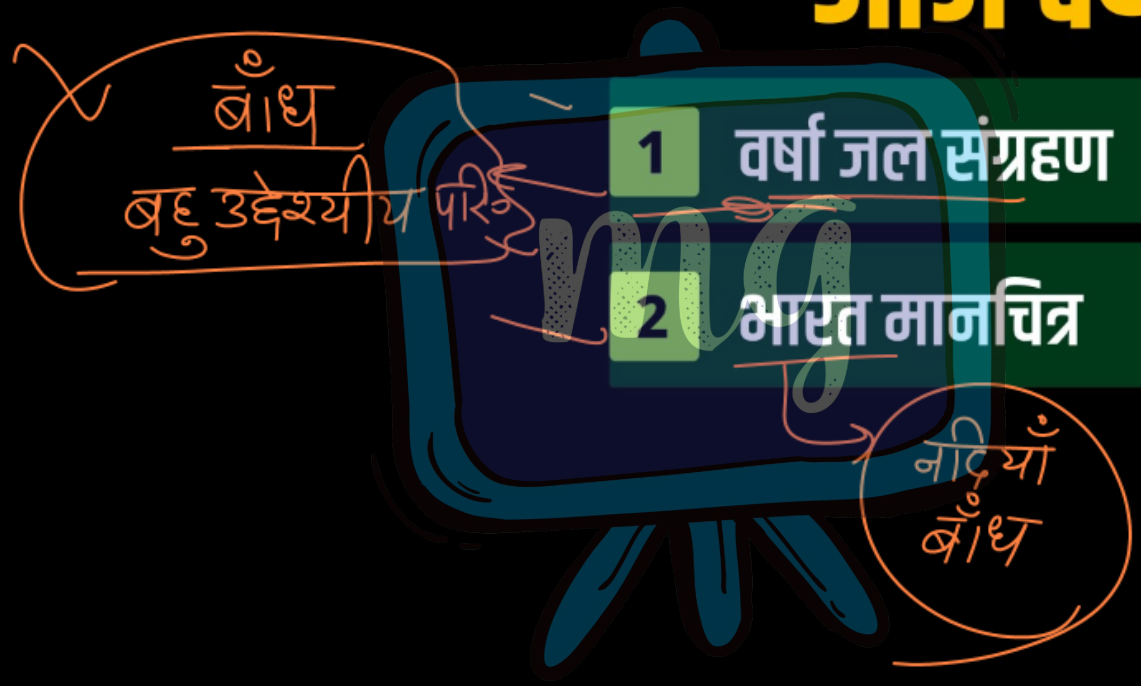


missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?



1. वर्षा जल संग्रहण
2. भारत मानचित्र

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

वर्षा जल संग्रहण

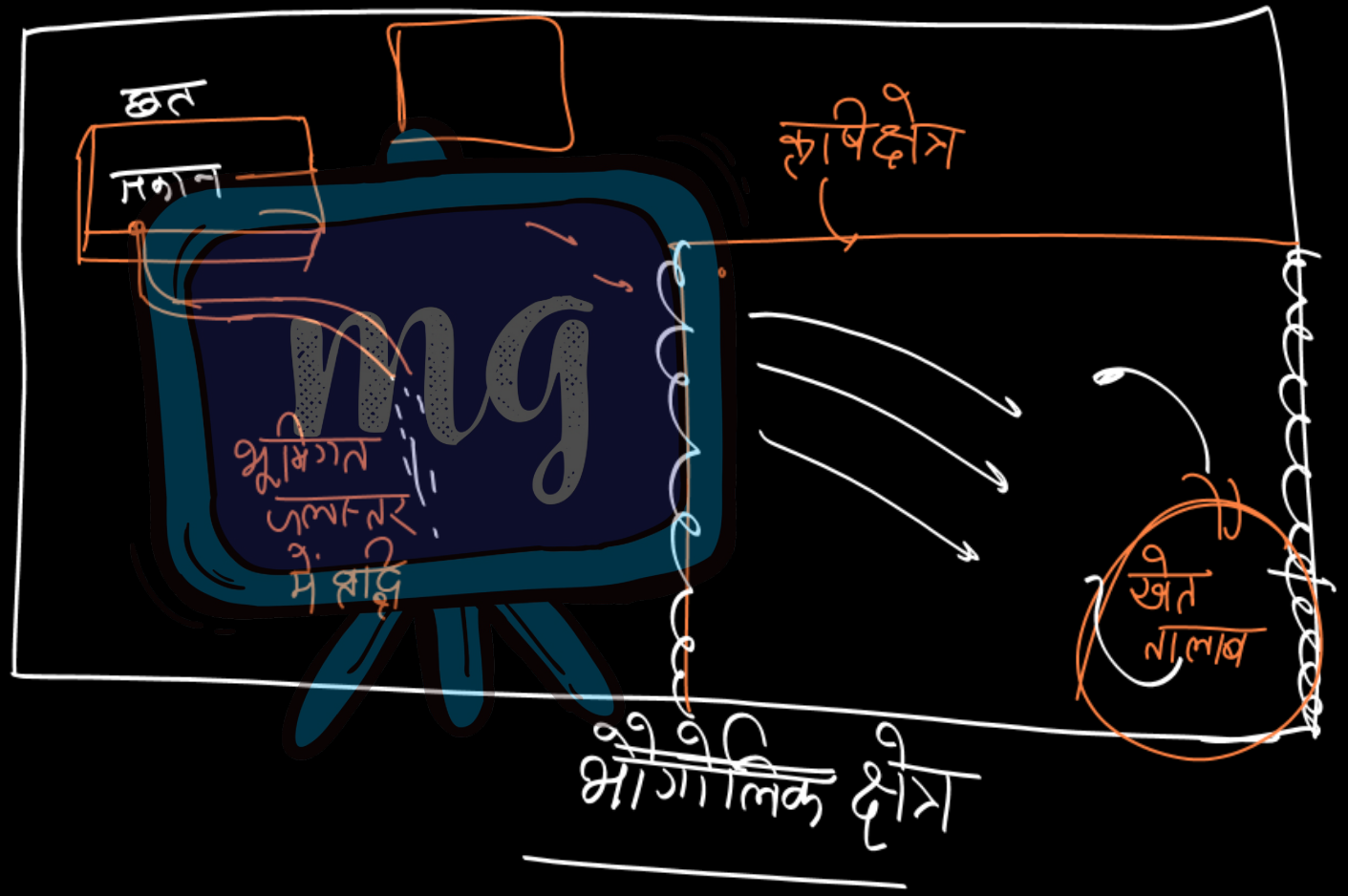


अ. हैंडपंप के माध्यम से पुनर्भरण

ब. बेकार पड़े कुएँ के माध्यम से पुनर्भरण

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वर्षा जल संग्रहण

- बहुत से लोगों का मानना है कि बहुउद्देशीय परियोजनाओं के अलाभप्रद असर और उन पर उठे विवादों के चलते वर्षाजल संग्रहण तंत्र सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक तौर पर व्यवहार्थ विकल्प हो सकते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- प्राचीन भारत में उत्कृष्ट जलीय निर्माणों के साथ-साथ जल संग्रहण ढाँचे भी पाए जाते थे।
- लोगों को वर्षा पद्धति और मृदा के गुणों के बारे में गहरा ज्ञान था।
- उन्होंने स्थानीय पारिस्थितिकीय परिस्थितियों और उनकी जल आवश्यकतानुसार वर्षाजल, भौमजल, नदी जल और बाढ़ जल संग्रहण के अनेक तरीके विकसित कर लिए थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

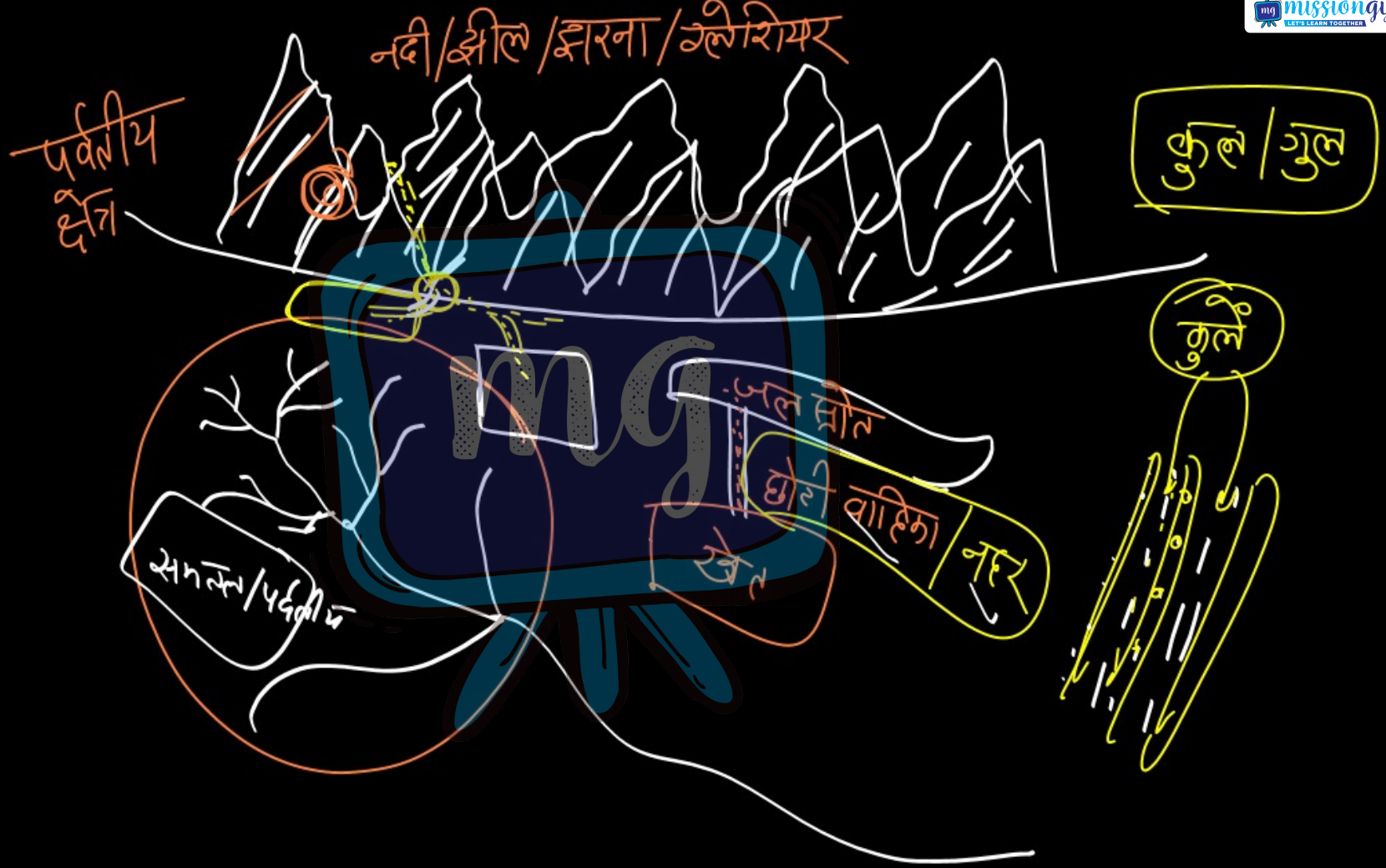
missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों ने नदी की धारा का रास्ता बदलकर खेतों में सिंचाई के लिए 'गुल'/'कुल' (पश्चिमी हिमालय) जैसी वाहिकाएँ बनाई हैं।



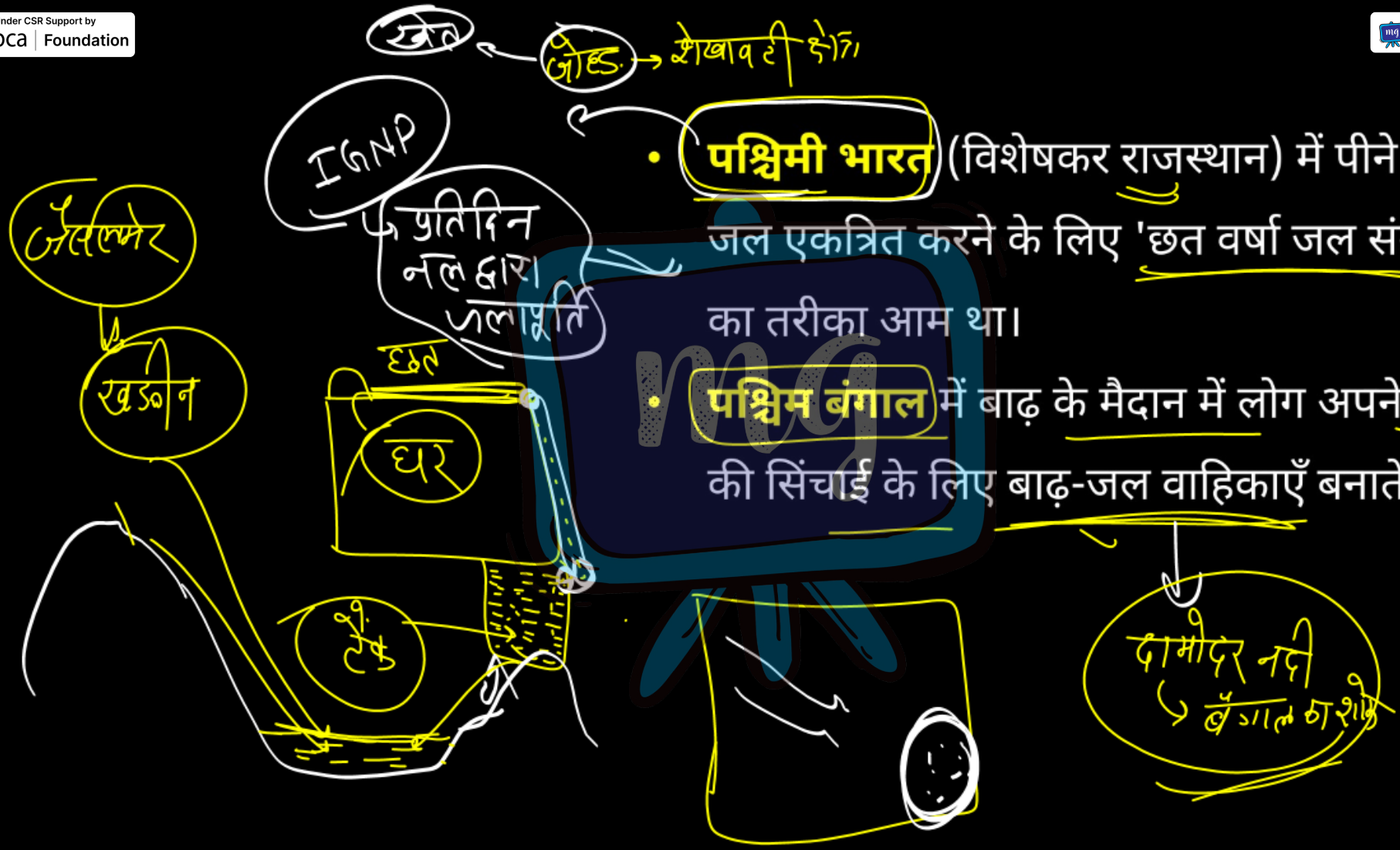
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



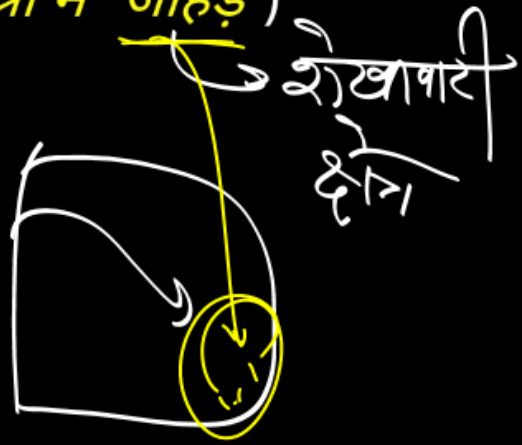
- **पश्चिमी भारत** (विशेषकर राजस्थान) में पीने का जल एकत्रित करने के लिए 'छत वर्षा जल संग्रहण' का तरीका आम था।
- **पश्चिम बंगाल** में बाढ़ के मैदान में लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए बाढ़-जल वाहिकाएँ बनाते थे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- **शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में** खेतों में वर्षा जल एकत्रित करने के लिए गड्ढे बनाए जाते थे ताकि मृदा को सिंचित किया जा सके और संरक्षित जल को खेती के लिए उपयोग में लाया जा सके। (*जैसलमेर में 'खादीन' और अन्य क्षेत्रों में 'जोहड़'*)





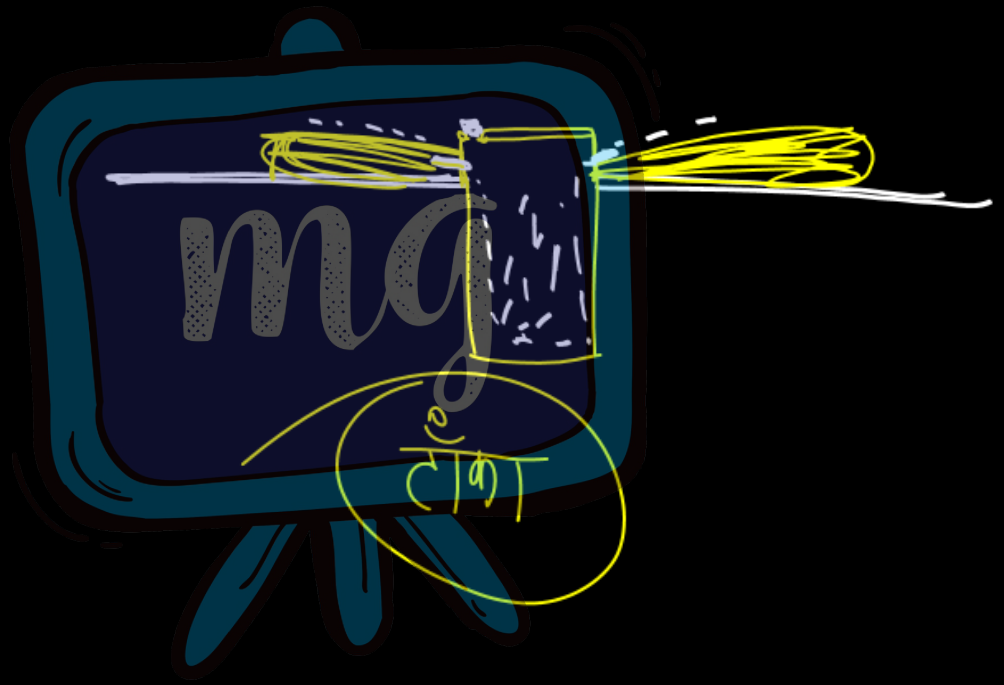
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- राजस्थान के अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों (विशेषकर बीकानेर, फलोदी और बाड़मेर) में लगभग हर घर में पीने का पानी संग्रहित करने के लिए भूमिगत टैंक ('टाँका') हुआ करते थे।
- टाँका में वर्षा जल अगली वर्षा ऋतु तक संग्रहित किया जा सकता है।
- जिससे ये ग्रीष्म ऋतु में पीने का जल उपलब्ध करवाने वाला स्रोत बनता है।

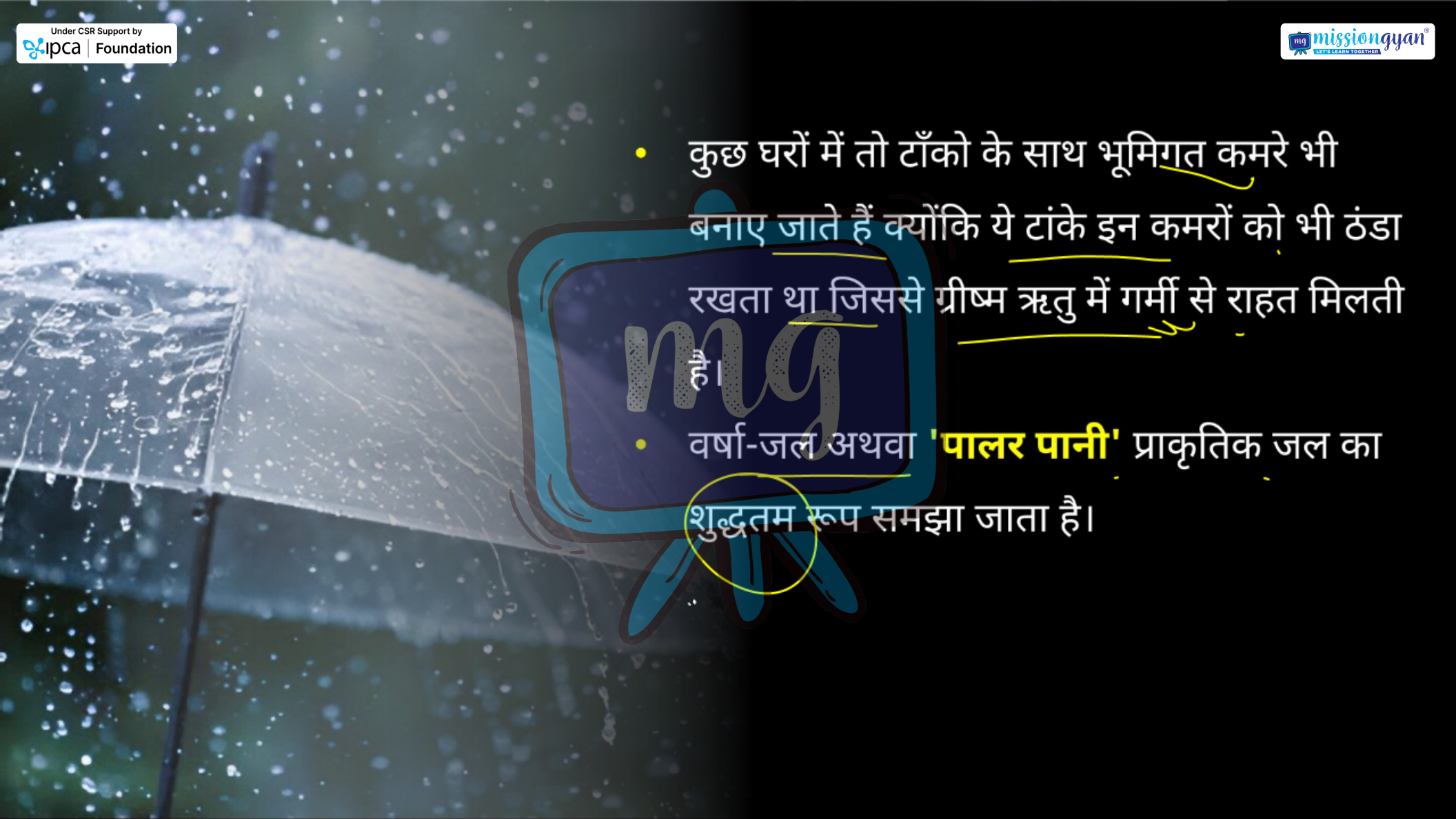
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



- कुछ घरों में तो टाँको के साथ भूमिगत कमरे भी बनाए जाते हैं क्योंकि ये टांके इन कमरों को भी ठंडा रखता था जिससे ग्रीष्म ऋतु में गर्मी से राहत मिलती है।
- वर्षा-जल अथवा **'पालर पानी'** प्राकृतिक जल का शुद्धतम रूप समझा जाता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

रोचक तथ्य—

- मेघालय की राजधानी शिलांग में छत वर्षा-जल संग्रहण प्रचलित है।
- यह रोचक इसलिए है क्योंकि चेरापूँजी और मॉसिनराम में विश्व की सबसे अधिक वर्षा होती है और फिर भी यह शहर पीने के जल की कमी की गंभीर समस्या का सामना करता है।
- शहर के लगभग हर घर में छत वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था है।

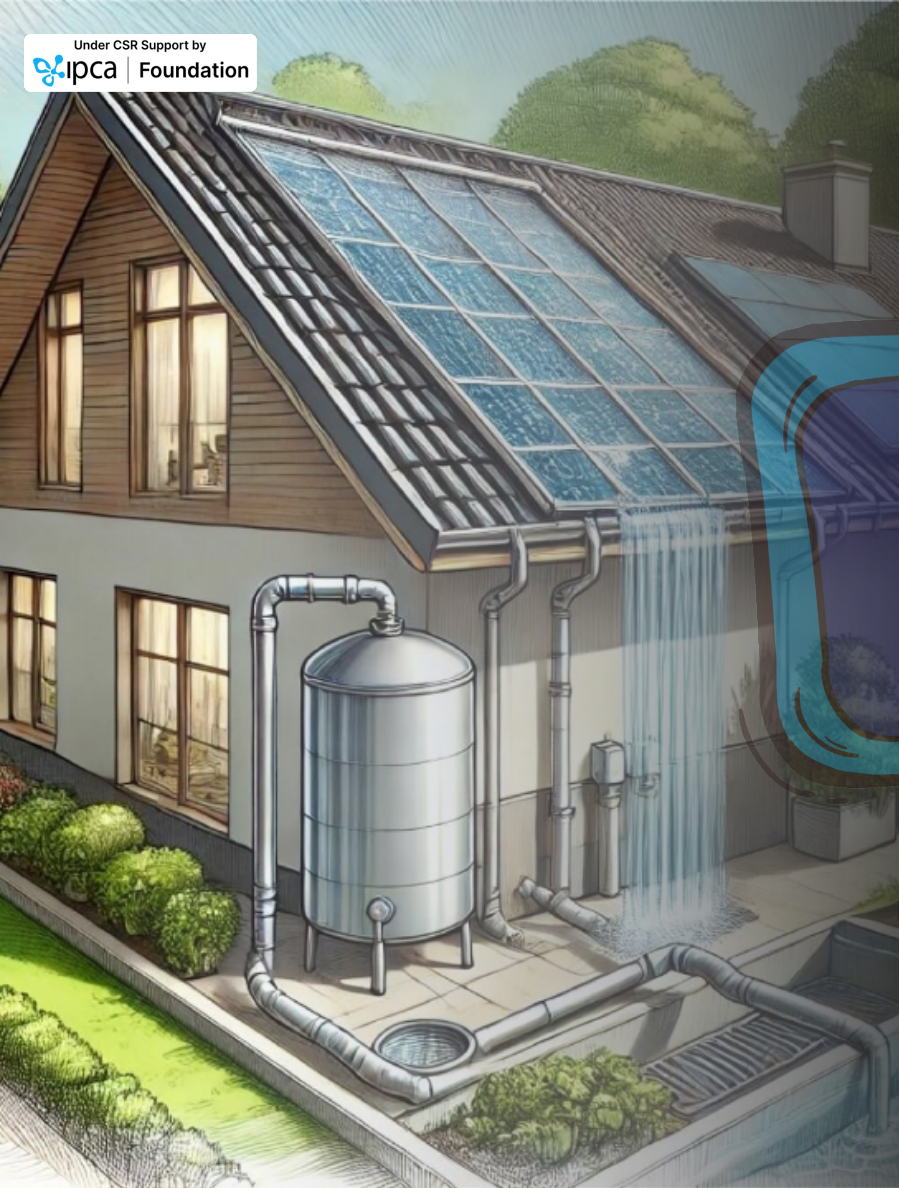
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- आज पश्चिमी राजस्थान में छत वर्षा-जल संग्रहण की रीति इंदिरा गांधी नहर से उपलब्ध बारहमासी-पेयजल के कारण कम होती जा रही है।
- हालाँकि कुछ घरों में टाँकों की सुविधा अभी भी है क्योंकि उन्हें नल के पानी का स्वाद पसन्द नहीं है।
- सौभाग्य से आज भी भारत के कई ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जल संरक्षण और संग्रहण का यह तरीका प्रयोग में लाया जा रहा है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- तमिलनाडु एक ऐसा राज्य है जहाँ पूरे राज्य में हर घर में छत वर्षाजल संग्रहण ढाँचों का बनाना आवश्यक कर दिया गया है।
- इस संदर्भ में दोषी व्यक्तियों पर कानूनी कार्यवाही हो सकती है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

